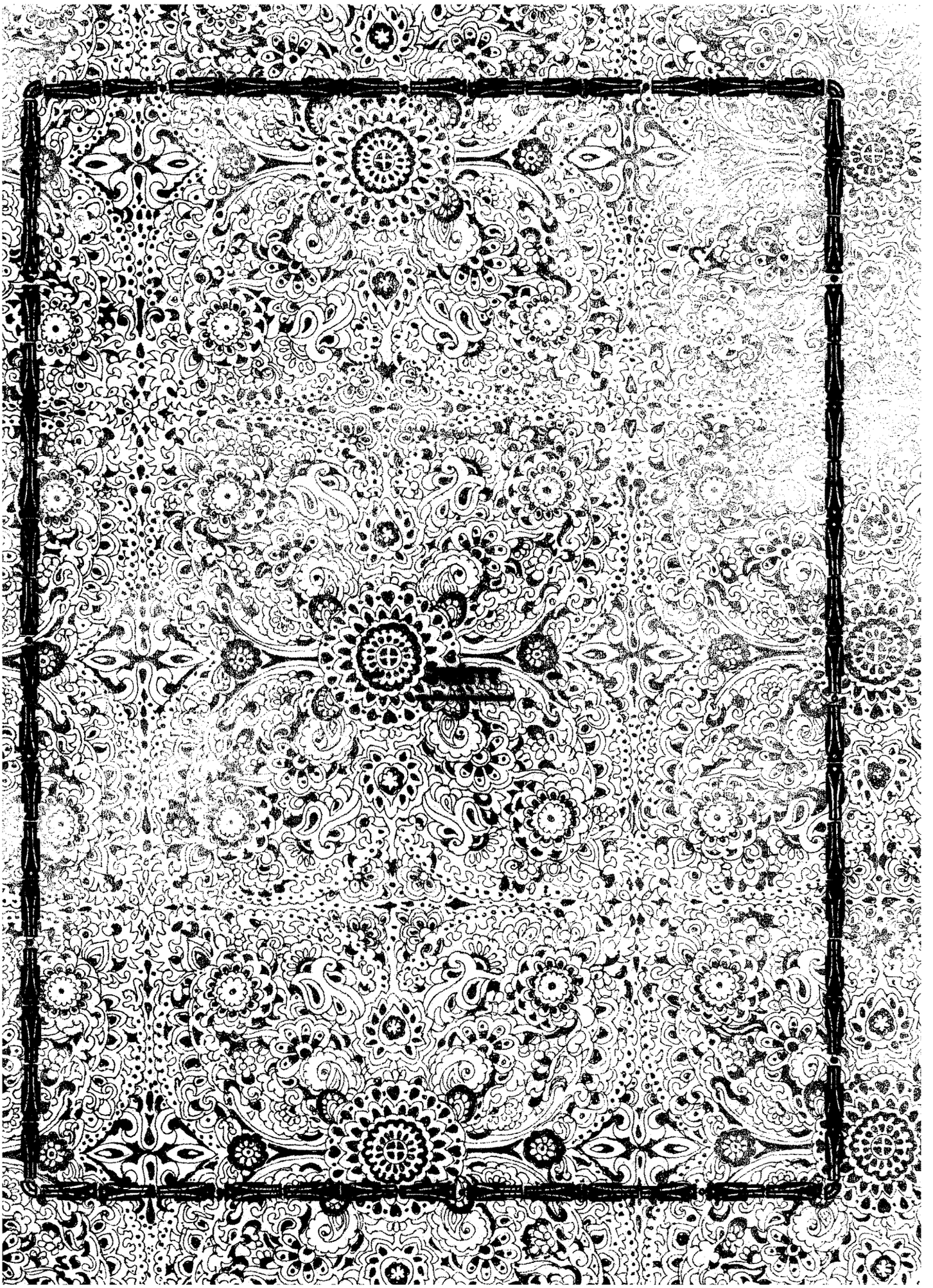

उपसंहार

आधुनिक हिंदी साहित्य में हास्य - व्यंग्य के जनक माने जानेवाले, कवि सम्मेलनों में ख्याति प्राप्त काका हाथरसी स्वयं सौम्य, शान्त रहकर आज तक हिंदी साहित्य के पाठकों को, हास्य - व्यंग्य का खज़ाना लुटाते आये है। पिछले पाँच दशकों से काकाजी ने हिंदी साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बना ली है। साहित्य, संगीत एवं चित्रकला इन तीनों कलाओं का त्रिवेणी संगम उनके व्यक्तित्व में है। उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ खोजने पर पता चलता है कि, परोपकार, गर्वरहित व्यवहार, सरलता, निष्कपट वृत्ति, मिलनसार, हाजिरजवाबी, सहृदय और अनुशासन प्रिय काकाजी का आरम्भिक जीवन बहुत ही कठिणता से गुजरा। जीवन के कठोर संघर्षों से जूझकर उनका व्यक्तित्व कुंदन के समान निखार आया है।

मेरे प्रथम अध्याय का शीर्षक "काका हाथरसी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय" है। एक साहित्यकार, संगीतज्ञ, चित्रकार के रूप में जाने जानेवाले काका हाथरसी का व्यक्तित्व कैसा है ? यह खोजने का प्रयास करने पर हम उनके जीवन की उन घटनाओं पाते है जिसकी प्रतिक्रिया उनके साहित्य में हम देखते है। हाथरस जैसे एक छोटे से कस्बे के एक गरीब परिवार में जन्म लेनेवाले काका हाथरसी को बचपन में न खेलना नसीब हुआ, न पढ़ना। बचपन में ही पिताजी को मृत्यु हो जाने के कारण नौकरी करनी पड़ी। वहींपर उन्हों ने तुकबन्दी शुरु की। जन्मजात प्रतिभा के धनी होने के कारण न ही उन्हें किसी खास वातावरण की जरूरत थी और न एकांत की। नौकरी करते-करते ही वे कविताएँ भी करते रहे। उनका बचपन विपन्नावस्था में बीता लेकिन उस वक्त भी वे अपने नटखटपन से बाज़ नहीं आये। एक बार तो उन्होंने एक बारात में

सिर्फ तुक मिलाने के लिए " चन्दो चच्चीं"का इस्तमाल क्या कर लिया, झगड़ा शुरू हुआ और लोगों को भूखे पेट सोना पड़ा। काकाजी ने सिर्फ चौथी कक्षा तक की शिक्षा पाई है लेकिन उन्हें घर पढ़ाने आने-वाले मास्टर जी उनके काव्य साहित्य का, हास्य - व्यंग्य का पहला शिकार बन गया।

काकाजी अपनी कविता पढ़ने की भड़ास की बारातों में पूरी करने लगे थे लेकिन एक बार झगड़ा हो जाने के बाद उन्होंने वह बन्द कर दिया। परिवार की जिम्मेदारी उठाते हुए उन्होंने चित्रकारी करना शुरू किया। इसी बीच अपने मामा की नाटक मण्डली में हर साल काम किया करते थे। इसी बीच उनकी शादी नौगाँव की लड़की " रतना " से हो गयी। पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ गयी और चित्रकारी में उधार चलने लगा इसलिए उन्होंने वह काम बंद कर दिया और बाद में " संगीत " पत्रिका का प्रकाशन ८० रुपये की पूँजी लगाकर किया। हाथरस में आज जो " संगीत कार्यालय " हम देखते हैं वह उसी पौधे का वटवृक्ष है।

कवि सम्मेलनों के लिए काकाजी ने जीवन में कई यात्राएँ की। इनसे उन्हें जो अनुभव प्राप्त हुए उन्ही को उन्होंने अपनी कविताओंमें उतारा है। सिर्फ चौथी कक्षा पास काकाजी ने जीवन के अनुभवों से अपने व्यक्तित्व को इतना ऊँचा उठाया है कि, शिक्षा किसी के व्यक्तिगत विकास में बाधक बनती है इस सिध्दांत को उन्होंने झूठा सिध्द कर दिया है। आज कल शिक्षा तो सिर्फ क्लर्क बनाने का कारखाना होकर ही रह गई है। मनुष्य जीवन के अनुभवों से वह सारा ज्ञान प्राप्त कर सकता है जो उसके विकास के लिए आवश्यक है। काकाजी के पास गरीबी एवं संघर्षों से गुजरे बचपन के साथ-साथ जन्मजात प्रतिभा भी है जिसकी बदौलत वे चाहे जहाँ बैठकर कविताएँ कर सकते है। उन्हीं की भाषा में कहें तो उनके दिमाग

में हास्य के कोटाणु कुलबुलाते है। उनके जीवन परिचय को देखकर ही उनके अनुभव क्षेत्र के व्यापक ज्ञान को देखकर हो उनकी साहित्यिक व्यापकता को हम समझा सकते है। उनके कविताओं में आया हुआ हर विषय, उसका हर उदाहरण, उनके अनुभवों से हो निर्मित है। उनके साहित्य में जो विषय वैविध्य, समय सूचकता आदि कई गुण पाते है। उनका जीवन एक खुली किताब को तरह है। जो चाहे उसमें से कुछ अनुभवों को लेकर हँस लगने से बच सकता है। विपरित परिस्थितोयों में रहकर भी उनके अंदर का हास्य कवि अबतक जीवित है। जो समाज में प्रचलित रूढ़ी परंपराएँ, समाज के हर पहलू, समाज को समस्याएँ आदिपर लिखाते-लिखाते अपनी बत्सी पर भी उतनी ही सफलता के साथ काकीजी पर भी लिखा सकता है।

काकाजो के साहित्य का विषाय मानवेतर प्राणोयों से लेकर भ्रष्टाचारो नेता तक, कोई भी बन गया है। उसको कविताएँ उन्हीं की जबानी सुनना यह अत्यंत आनन्द दायी अनुभव है। खुद शान्त रहकर दुसरों को हँसाने का काम करनेवाले काकाजी का पूरा व्यक्तित्व ही हास्य रसयुक्त है। हास्य के बारे में उनके विचार भी देखें -

" डाक्टर वैद्य बता रहे हैं कुदरत का कानून,
जितना हँसता आदमो, उतना बढ़ता खून।
उतना बढ़ता खून, हास्य में की कंजूसी,
सुंदर सूरत-मूरत पर छाई मनहूसो।
कहें काका कवि, हास्य-व्यंग्य जो पीते डट के,
रहती सदा बहार, बुढ़ापा पास न फटके।"

चूँकि मेरे लघुशोध - प्रबन्ध का विषाय काका हाथरसी के काव्य में चित्रित हास्य व्यंग्य है, उनके काव्य को पूरो तरह परखने से पहले हास्य-व्यंग्य की सूक्ष्म पहचान बहुत हो आवश्यक हो गई थी।

दूसरे अध्याय का शीर्षक है - "हास्य-व्यंग्य की परिभाषा और स्वरूप।" आम तौरपर देखा जाए तो हास्य को व्यंग्य से और व्यंग्य को हास्य से अलग नहीं माना जाता लेकिन सूक्ष्मता से देखने पर पता चलता है कि, उन दोनों में अंतर है। हर हास्य के पीछे व्यंग्य कारण नहीं बन सकता और न ही हर व्यंग्य में हास्य हो सकता है। इन दोनों के बीच की विभाजक रेखा इतनी सूक्ष्म है कि, उनको अलग करना मुश्किल लगता है लेकिन आज व्यंग्य एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्वीकृत हो चुकी है। हास्य-व्यंग्य के विषय के बारे में आज बहुत कम लोग लिखते है क्योंकि, उसमें उच्च साहित्यिक गुण नहीं ऐसा माना जाता है। यहाँतक कि, हास्य कवि को एक जोकर कहने में भी लोग झिझकिचाते नहीं है। लेकिन जीवन में हास्य-व्यंग्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

आज हम ऐसे कई उदाहरण देख सकते है कि, जिसमें व्यंग्य की बदौलत मनुष्य में सुधार आया और वह अपना व्यक्तिगत विकास करने में सफल हो गये। भक्तिकालीन कवि कबीरदास एक अच्छे व्यंग्यकार के रूप में जाने जाते हैं। उनके व्यंग्य तीखे और चोट पहुँचाने वाले थे। लेकिन उसी की वजह से लोगों में जागृति लाने में वे सफल हो गये। तुलसीदास की पत्नी रत्नावली अपने मायके चली गयी थी और तुलसीदास भी जब उससे मिलने गये तो उन्होंने ताना मार दिया -

"लाज न आयी आप को दौरे आये हूँ नाथ।"

इसी की वजह से तुलसीदास एकदम विरक्त हो गये। अगर तुलसीदास की पत्नी उनपर व्यंग्य न करती तो न रामचरित मानस का निर्माण होता और न तुलसीदास को हम जान सकते।

इस व्यंग्य में जब हास्य मिल जाता है तो उसका मजा और बढ़ जाता है। हास्य और व्यंग्य के इस अध्ययन से ही पता चलता है कि, हास्य

और व्यंग्य के कितने प्रकार है। हास्य और व्यंग्य यह दो ही प्रकार का माना जाता था। लेकिन सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो इसके और भी कई प्रकार हो सकते है। हास्य और व्यंग्य पर जितनी सूक्ष्मता से अध्ययन होना जरूरी है, उतना नहीं हो पाया है। हास्य और व्यंग्य को आज तक न पूरी तरह से परिभाषित किया गया है और न उसके लक्षण, प्रकारादि के बारे में अंतिम रूप से कुछ कहा जा सकता है।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है - "काका हाथरसी के काव्य में हास्य व्यंग्य।" काकाजी ने सिर्फ हास्य-व्यंग्य के माध्यम से इतने विभिन्न विषयोंपर काव्यरचनाएँ की है जिन विषयों के बारे में हम कभी सोचते भी नहीं है। समाज के हर पहलू पर हास्य-व्यंग्य की पिचकारी मारनेवाले काकाजी के काव्य का पहला शिकार काकीजी हैं। ब्रज और मथुरा में होली खेलने का ऐसा रिवाज है कि, लोग होली खेलना अपने घर से ही शुरू करते है। इसी प्रकार काकाजी ने भी हास्य-व्यंग्य की बौछारों में पहले काकी को भिगोया है। काकाजी ने अपने काव्य में काकी के एक ऐसे व्यक्तित्व को सामने रखा है जिसकी वजह से उनके मूल व्यक्तित्व को पहचान करना कठिन हो गया है। जैसे --

"कहें काका काकी का नासिका रूप ऐसा अलबेला
दो निंबू के बीच, रखा दिया जैसे केला।"

अब ऐसा वर्णन अगर काकाजी ने किया है तो क्या हम काकीजी के व्यक्तित्व को सही रूप में पहचान सकेंगे ? रिश्तेदारोंपर किये हुए उनके व्यंग्य से भारतीय समाज में पारिवारिक सम्बन्धों का महत्व और प्रथा, रूढी-परंपराओं की पहचान हमें हो जाती है। साले को लेकर ठिठोली, साली को लेकर हास्य-व्यंग्य करनेवाले काकाजी ने पती-पत्नी के बीच लड़ाई-झगड़ा आमोद-प्रमोद कैसा होता है उसे अपनी कविताओं में दिखाया है। सिर्फ मनुष्योंपर ही काकाजी ने तोर छोड़े है, ऐसी बात नहीं प्राणीयों पर भी

उनकी कलम ने उतनी ही चुटीला, पैना, तीखा व्यंग्य किया है, हँसी-मजाक किया है। चूहा, खटमल, पिल्ला, भैंस, गधा आदि कई ऐसे प्राणी है जिनके ऊपर काकाजी ने कविताएँ लिखी है।

घर से बाहर निकलकर काकाजी ने कवि और कविसम्मेलन, रस, विभिन्न वाद आदि कई प्रकार की कविताएँ की हैं जिन्हें, साहित्यिक हास्य-व्यंग्य के अंतर्गत रखा जा सकता है। बुध्दिजीवियोंपर व्यंग्य, कर काकाजी ने अपनी तर्कशीलता का परिचय हमें कराया है। डाकूओं के आत्म-समर्पण में उनका स्वार्थ दिखाया है। क्रिकेट, फिल्मसिटी जैसे विषयोंपर कविताएँ करके काकाजी ने अपनी बहुश्रुतता का परिचय दिया है। अन्य भी ऐसे कई विषय है जिनपर काकाजी ने काव्यरचनाएँ की है जिन्हें एक निश्चित कोटि में बाँधकर प्रस्तुत करना असंभव है क्योंकि एक और तो वे कौन से शहर में कौन सी चीज मशहूर है इसपर कविता करते हैं, दूसरी और शिमला समझौते पर लिखते हैं, निराकर साकार के भेद पर लिखते है, दोस्त की परिभाषा बताते है, लिंग भेद पर लिखते है, राष्ट्रगान के लाभ पर लिखते हैं। इन अलग-अलग विषयों को एक कोटि में, प्रकार में बाँध कर नहीं रखा जा सकता।

काकाजी के काव्य में काव्यभाषा के रस, अलंकार, विविध शब्दावली, छन्द, विभिन्न भाषी शब्दप्रयोग आदि विभिन्न प्रयोग देखने को मिलते है और इसके साथ ही शेर, आरती, पद.भजन, कवियों की पंक्तियों पर कवितयाँ, पैरोडियाँ आदि कई काव्यरूप भी उनके काव्य में देखने को मिलते है।

चौथे अध्याय का शीर्षक है - "काका हाथरसी के काव्य में चित्रित विभिन्न समस्याओंका मूल्यांकन" काकाजी ने समाज में प्रचलित

ऐसी कई समस्याओं को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है जिन्हें स्थूल रूप से धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं में विभाजित किया जा सकता है। आधुनिक भक्त और उसकी भक्ति, धर्मनिरपेक्षता जैसी समस्याओं को लेकर लिखी कविताएँ धार्मिक समस्याओं के अंतर्गत आ जाती है। इन के माध्यम से काकाजी ने धर्म के क्षेत्र में प्रचलित स्वार्थ और ढोंग का पर्दाफाश किया है। नेताओं के भ्रष्टाचार, चुनाव, दल बदलू वृत्ति, चापलुसी, पदलोलुपता, रिश्वत आदि को लेकर लिखी कविताओं में इन राजनीतिक समस्याओंपर तीखा व्यंग्य किया है। विकासशील देश होने कारण भारत में आर्थिक समस्या मुख्य रूप से दिखाई देती है। मंहगाई, गरीबी, जैसी समस्याओंपर काकाजीने अपनी कलम का कमाल दिखाया है। समाज की समस्याएँ जैसे शिक्षा समस्या, भाषा समस्या, दहेज, पैशान, भ्रष्टाचार जैसी कई समस्याओंपर काकाजी ने काव्य रचनाएँ की है। इस प्रकार समाज में व्याप्त समस्याओं को काकाजी ने अपने कार्यक्षेत्रों का निशाना बनाकर उनको हास्य-व्यंग्य कविताओं के माध्यम से पेश कर जागृति निर्माण करने का प्रयास किया है।

हास्य-व्यंग्य रचनाकार चाहे जैसी रचनाएँ लिखें समाज का उसकी ओर देखने का दृष्टिकोण एक जैसा ही है। वह अपनी ओर से समाज में जागृति करने का कार्य करता है, लोगों को हँसाने का काम करता है जो कि, बहुत मुश्कील है फिर भी लोग उसके साहित्यिक मूल्य को बहुत कम मानते है, उसे एक जोकर कहते है। गिरिराजशरण अग्रवाल जी ने तो कहा है कि, यही वजह है कि, काका जैसे साहित्यकार को भी अपनी किताबों पर अपना कार्टून/व्यंग्यचित्र छपवाना पड़ता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि, काकाजी के काव्य में कोई कमियाँ नहीं है। काकाजी मंचीय कवि है। उन्होंने अपने श्रोतृवर्ग को खुश करने के लिए कई बार तुकबन्दी का

सहारा लिया है। इसके लिए उन्होंने विचित्रा शब्दों का प्रयोग भी किया है। परंतु मंचीय कवि की कविताओं में इन गुणों का होना जरूरी है। काकाजी की कविताएँ ऐसी है जो उन्होंने जीवन को जीकर लिखी है। उनकी कविताएँ पूरा परिवार एक साथ बैठकर सुन सकता है। कबीर आदि की तरह उनके काव्य में चोट पहुँचानेवाला तीखा व्यंग्य नहीं है। बहुत हलके-फुलके ढंग से लिखी ये कविताएँ पूरी तरह से समाजोन्मुख है। उनके काव्य में वैयक्तिकता बहुत कम पायी जाती है।

समग्र दृष्टि से विचार करें तो थोड़ी सी कमियों के बावजूद भी हिंदी के हास्य-व्यंग्य साहित्य के विकास में काकाजी ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी साहित्य के हास्य-व्यंग्य रचनाओं की ओर पाठकों एवं श्रोताओं को आकृष्ठ करने का महत्वपूर्ण कार्य काकाजी ने किया है इसलिए हम उनकी रचनाओं के महत्व को, उनके योगदान को हास्य-व्यंग्य रचनाओं के विकास का एक महत्वपूर्ण मोड़ या एक मील का पत्थर मान सकते है।